ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन, जयपुर में पण्डित टोडरमल सर्वोदय ट्रस्ट द्वारा आयोजित

16वाँ आध्यात्मिक शिक्षण शिविर

(रविवार, दिनांक 6 अक्टूबर से मंगलवार, दिनांक 15 अक्टूबर तक)

इस शिविर में तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल, पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल जयपुर, ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना, ब्र. यशपालजी जैन जयपुर, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, पण्डि शान्तिकुमारजी पाटील जयपुर, पण्डित संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, पण्डित शिखरचंदजी विदिशा, पण्डित कमलचंदजी पिड़ावा, ब्र. सुनीलजी शास्त्री रामगढ आदि अनेक विद्वानों के प्रवचनों, कक्षाओं, व्याख्यानमाला व तत्त्वचर्चा का लाभ मिलेगा। साथ ही साथ दिनांक 12 से 14 अक्टूबर तक आयोजित संगोष्ठी के माध्यम से डॉ. वीरसागरजी जैन दिल्ली, डॉ. श्रीयांसजी सिंघई जयपुर, डॉ. अशोकजी गोयल दिल्ली, पण्डित राजकुमारजी बांसवाड़ा, डॉ. संजयजी जैन भोगांव दौसा, डॉ. पी.सी. रांवका जयपुर, डॉ. राजीवजी प्रचंडिया अलीगढ, डॉ. महेशजी जैन भोपाल, डॉ. अरुणजी बण्ड जयपुर, डॉ. राजेन्द्रजी बंसल अमलाई, डॉ. दीपकजी जैन जयपुर, डॉ. जयन्तीलालजी चेन्नई मंगलायतन, डॉ. मनीषजी शास्त्री खतौली, डॉ. शुद्धात्मप्रभा टडैया मुम्बई आदि विद्वानों का भी लाभ प्राप्त होगा।

इसके अतिरिक्त नन्हे-मुन्ने बालकों के लिए डॉ. शुद्धात्मप्रभा टडैया मुम्बई द्वारा विशेष बाल कक्षाएँ भी आयोजित होंगी।

संपूर्ण कार्यक्रम ब्र. यशपालजी जैन जयपुर के कुशल निर्देशन में सम्पन्न होंगे।

आप सभी को शिविर में सपरिवार इष्ट-मित्रों सहित पधारने हेतु हार्दिक आमंत्रण है।

शिविर के विशिष्ट कार्यक्रम -

1. ध्वजारोहण एवं शिविर उद्घाटन	दिनांक 6 अक्टूबर
2. श्री टोडरमल स्नातक परिषद एवं अ.भा.विद्वत्परिषद् द्वारा पण्डित टोडरमल और उनका मोक्षमार्गप्रकाशक विषय पर संगोष्ठी	दिनांक 12 से 14 अक्टूबर
3. अ. भा. जैन युवा फैडरेशन का अधिवेशन	दिनांक 13 अक्टूबर

नोट - अपने पधारने की पूर्व सूचना अवश्य देवें ताकि भोजन व आवास की उचित व्यवस्था की जा सके।

वीतराग-विज्ञान

वीतराग-विज्ञान ही, तीन लोक में सार।
वीतराग-विज्ञान का , घर-घर होय प्रसार।।

वर्ष : 32 (वीर नि. संवत् - 2539) 363 अंक : 3

मैं निज आतम...

मैं निज आतम कब ध्याऊँगा।।
रागादिक परिनाम त्याग कै, समता सौं लौ लाऊँगा।।
मन-वच-काय जोग थिर करकै, ज्ञान समाधि लगाऊँगा।
कब हौं क्षपकश्रेणि चढि ध्याऊँ, चारितमोह नशाऊँगा।।
मैं निज आतम ...।।1।।
चारों करम घातिया क्षय करि, परमातम पद पाऊँगा।
ज्ञान-दरश-सुख-बल भंडारा, चार अघाति बहाऊँगा।।
मैं निज आतम ...।।2।।
परम निरंजन सिद्ध शुद्ध पद, परमानंद कहाऊँगा।
'द्यानत' यह सम्पति जब पाऊँ, बहुरि न जग में आऊँगा।।
मैं निज आतम ...।।3।।

- कविवर पण्डित द्यानतरायजी

छहढाला प्रवचन

25 दोषों से रहित सम्यग्दृष्टि

पिता भूप वा मातुल नृप जो, होय न तो मद ठानै।
मद न रूप को मद न ज्ञान को, धन-बल को मद भानै।।१३।।
तप को मद न मद जु प्रभुता को, करै न सो निज जानै।
मद धारै तो यही दोष वसु, समकित को मल ठानै।।
कुगुरु-कुदेव-कुवृष सेवक की नहीं प्रशंस उचरे है।
जिन-मुनि-जिनश्रुत बिन कुगुरादिक तिन्हें न नमन करे है।।१४।।

(सुप्रसिद्ध आध्यात्मिक विद्वान पण्डित दौलतरामजीकृत छहढाला पर गुरुदेवश्री के प्रवचन पाठकों के लाभार्थ यहाँ प्रस्तुत किये जा रहे हैं।)

(गतांक से आगे....)

संसार में परिभ्रमण करता हुआ जीव शुभाशुभ कर्मवश उच्च कुल तथा नीच कुल में अनन्तबार जन्म ले चुका है, यह तो क्षणिक संयोग है। शाश्वत आत्मा को इस जन्म का अभिमान करने से क्या लाभ है? जन्म लेना तो शर्म की बात है।

रत्नत्रय के उत्तम आचरण द्वारा आत्मा को मोक्षमार्ग में लगाना और मिथ्यात्वादि पापों के अधम आचरण को छोड़ना - यही उच्च कुल प्राप्त करने का फल है।

उच्च कुल में जन्म लेकर भी यदि अभक्ष्य भक्षण आदि निंद्य कार्य करे तो नरक में ही जाता है; उच्च कुल नरक में जाने से नहीं रोक सकता; ऐसा विचार कर धर्मी जीव कुल तथा जातिमद को छोड़ देते हैं।

एक वैरागी बालक अपनी माता से दीक्षा लेने की आज्ञा माँगता है। तब उसकी माता कहती है कि बेटा मैं तुझे दीक्षा की आज्ञा तो देती हूँ; परन्तु एक शर्त है।

पुत्र कहता है - माताजी ! कहिये, आपकी क्या शर्त है ? चाहे जैसी कड़ी शर्त हो, फिर भी मैं अवश्य पूरी करूँगा।

माता कहती है कि दीक्षा लेने के बाद आत्मसाधना ऐसी करना कि तुझे अब दूसरी माता न मिले अर्थात् मैं तेरी अन्तिम माता बनूँ। इस शर्त के साथ मैं तुझे

दीक्षा लेने की अनुमति देती हूँ।

पुत्र कहता है – माताजी, मैं अप्रतिहत साधना करके अवश्य केवलज्ञान प्राप्त करूँगा और पुन: इस संसार में जन्म धारण नहीं करूँगा अर्थात् दूसरी माता नहीं बनाऊँगा।

देखो ! संसार में माता के उदर से जन्म लेना भी एक कलंक है, उसका क्या मद करना ? चैतन्यमूर्ति अशरीरी भगवान की पहिचान माता-पिता के संबंध से कराना पड़े, यह तो शर्म है। जिन्होंने अशरीरी चैतन्यतत्त्व अनुभव में लिया, उन्हें माता-पिता संबंधी बड़प्पन का मद नहीं होता। इसप्रकार धर्मी को जातिमद तथा कुलमद का अभाव है।

(३) रूपमद – सम्यग्दृष्टि जीव को शरीर के रूप का गर्व नहीं होता। आत्मा का रूप तो ज्ञान है। धर्मी जीव शरीर से भिन्न अपने को ज्ञानरूप से देखता है। इस शरीर का रूप मेरा नहीं, यह तो एक क्षण में नाश को प्राप्त होता है तथा सड़ जाता है, इसका गर्व कौन करे ? इसतरह धर्मी को सुन्दरता का गर्व नहीं होता तथा किसी गुणवान् का शरीर कुरूप-काला, कुबड़ा हो तो उसके प्रति तिरस्कार भी नहीं होता।

सुन्दर मनुष्य भी यदि पापकार्य करे तो दुर्गति में जाता है, इसलिए शरीर की सुन्दरता से आत्मा की शोभा बिलकुल नहीं होती। सम्यग्दर्शन प्रगट होना ही आत्मा का सच्चा, महान व श्रेष्ठ आभूषण है, इससे आत्मा तीन लोक में शोभायमान होता है।

अपने आत्मा को शरीर से भिन्न जाना है, इसलिए शरीर रूपवान् हो तो उसके द्वारा अपनी महत्ता प्रतीत नहीं होती और शरीर कुरूप हो तो दीनता भी नहीं होती; क्योंकि वह जानता है कि यह रूप मेरा नहीं, जड़ का है; इसलिये इसका क्या अभिमान करना? मेरा चैतन्यरूप है, चैतन्य के रूप से उच्च जगत में कोई नहीं है। वीतरागी चैतन्यरूप द्वारा ही मेरी शोभा है। शुभराग भी मेरे चैतन्यरूप की अपेक्षा कुरूप है और शरीर का रूप तो पुद्गल की रचना है। ऐसी प्रतीति होने से धर्मी को रूप का मद नहीं होता।

(४) विद्यामद अर्थात् ज्ञानमद – कोई विद्या आती हो या शास्त्रज्ञान हो, तो उसका घमंड धर्मी को नहीं होता। अहा, कहाँ परम अतीन्द्रिय केवलज्ञान और

कहाँ यह अल्पज्ञान! केवलज्ञान के अचिंत्य सामर्थ्य की अपेक्षा तो यह ज्ञान अनन्तवाँ भाग है। चैतन्यविद्या का समुद्र जिसने देखा, उसे गड्ढ़े जितने ज्ञातृत्व की महिमा का मद नहीं होता, यह तो जो ज्ञानी हैं और जिन्हें विशेष ज्ञानविद्या प्रगट हुई है, उनकी बात है। जो अज्ञानी हैं और विशेष ज्ञानादि न होने पर भी शास्त्रादि के अल्प ज्ञान में जो अधिक मद करते हैं, उन्हें तो आत्मा के अपार ज्ञानसामर्थ्य की खबर ही नहीं है, वे तो अल्प ज्ञातृत्व में ही अटक जाते हैं।

भाई ! तेरे ऐसे इन्द्रियज्ञान का मोक्षमार्ग में कोई महत्त्व नहीं है। यह इन्द्रियज्ञान तो क्षणिक विनाशी है। आत्मा के केवलज्ञान के सामने १४ पूर्व का ज्ञान भी अनन्तवाँ भाग है, तो तेरे बाह्य अभ्यास का क्या महत्व है? १४ पूर्व का अगाध ज्ञान तो भाव-लिंगी मुनि को ही होता है। धर्मी को शास्त्राभ्यास आदि हो; तथापि उसकी मुख्यता नहीं होती, उसको तो ज्ञानचेतना द्वारा अन्तर में अपने आत्मा के अनुभव की ही मुख्यता है। चैतन्यस्वभाव को ज्ञानस्वभाव में एकाग्र किए बिना सारी पढ़ाई व्यर्थ है। धर्मी को कदाचित् अन्य जानकारी कम हो; परन्तु अन्तर में ज्ञानचेतना द्वारा सम्पूर्ण भगवान आत्मा को जान लिया है, उसमें सब कुछ आ गया।

थोड़ी-सी जानकारी हो तो हमें सब कुछ आता है और दूसरों को नहीं आता – ऐसी अभिमानबुद्धि से अज्ञानी दूसरे धर्मात्मा का अनादर कर देते हैं। केवलज्ञान विद्या का स्वामी आत्मा कैसा है, उसका उसे ज्ञान नहीं है; इसलिए वह इन्द्रियज्ञान में मग्न हो रहा है। केवलज्ञानस्वभाव को जाने तो इन्द्रियज्ञान का अभिमान न हो। इन्द्रियज्ञान तो पराधीन ज्ञान है, उसका क्या अभिमान करना ?

वीतरागी श्रुत का ज्ञान तो वीतरागता का कारण है, वह मानादि कषाय का कारण कैसे हो सकता है ? इसलिए जैनधर्म के ऐसे दुर्लभ ज्ञान को प्राप्त करके आत्मा को मानादि कषायभावों से छुड़ाने और ज्ञान के परम विनयपूर्वक संसार के अभाव का उद्यम करने रूप जो अपने ज्ञान को मोक्षमार्ग में लगाते हैं, उन धर्मी जीवों को ज्ञानमद या विद्यामद नहीं होता।

अरे, मेरा चैतन्य भगवान मैंने अपने में देखा है, उसकी पूर्ण परमात्मदशा के सामने अन्य किसका अभिमान करूँ ? कहाँ सर्वज्ञदशा, कहाँ मुनियों की वीतरागी चारित्रदशा और कहाँ मेरी अल्पदशा ? स्वभाव से पूर्ण परमात्मा होने पर भी जब

तक केवलज्ञान को प्राप्त न करूँ, तब तक मैं छोटा ही हूँ – इसप्रकार दृष्टि में प्रभुता और पर्याय में पामरता – दोनों का धर्मी को विवेक है।

(५) धनमद अथवा ऋद्धि का मद – अन्तर में अपना चैतन्यवैभव जिसे दिखा है, ऐसे धर्मात्मा बाह्य वैभव को अपना नहीं मानते, तो फिर उसका मद कैसे कर सकते हैं ? समुद्र जैसा पूर्णानन्द अपने में तरंगित है – जहाँ ऐसी प्रतीति हुई, वहाँ अन्य सर्वत्र से मद उड़ जाता है। माता-पिता, धन, शरीर, पुत्र, राजपद, प्रधानपद – यह सब तो कर्मकृत हैं, इनका अभिमान क्या करना ? जिसने राग और पुण्य से अपने चैतन्यमूर्ति आत्मा को भिन्न अनुभव किया है, उसे राग या पुण्यफल का अभिमान कैसे हो सकता है ? यह तो सब कर्मसामग्री है, उसमें कहीं मेरा धर्म नहीं है। (जिन्हें धर्म की प्रतीति हुई है, उन्हें कर्मसामग्री में अपनापन क्यों रहेगा ? कर्मसामग्री द्वारा (पुण्य के फल द्वारा) जिसे अपनी महत्ता प्रतीत होती है, उसे कर्म से भिन्न अपना चैतन्य-वैभव दृष्टिगोचर नहीं हुआ – ऐसा जानना। धर्मी जानता है कि यह वैभव मेरा नहीं है, यह तो उपाधि है।

मेरे आत्मा का वैभव तो केवलज्ञानादि अनन्तचतुष्टय से भरपूर अक्षय-अखण्ड-अविनाशी है। माता-पिता महान हों या बाह्य में अटूट पुण्य-वैभव हो, उससे मुझे क्या प्रयोजन है ? वह सब कर्म की सामग्री है; वह मेरी जाति नहीं है; हम तो सिद्ध भगवंतों की जाति के तथा तीर्थंकरों के वंशज हैं; उनके मार्ग पर चलने वाले हैं। हम सिद्ध और तीर्थंकर भगवन्तों जैसे ही आत्मवैभव के स्वामी हैं। हमारा आत्मा चैतन्यदेव है, वही हमारी महानता है। यह चैतन्यदेव स्वयं महिमावन्त तथा जगत् में सर्वश्रेष्ठ है, इसके अतिरिक्त जगत में अन्य किसी पदार्थ द्वारा हमें अपनी महानता भासित नहीं होती। चैतन्य का ऐश्वर्य जिसने नहीं देखा, वह किसी न किसी पर के बहाने मिठास लेता है। जैसे निबौरी को एकत्र करके ऐसा माने कि मेरे पास कितना वैभव है ! वह तो बालक है, राजा कोई ऐसा नहीं करता। उसीप्रकार बाह्य में पुण्य वैभव तो निबौरी जैसे कड़वे विकार के फल हैं, बालबुद्धि अज्ञानी उसे अपना वैभव मानते हैं; परन्तु राजा जैसा सम्यग्दृष्टि जिसने अपने सच्चे चैतन्यनिधान को अपने में देखा है, कभी पुण्यफल के द्वारा अपनी महानता नहीं समझता, उसे तो वह धूल के ढेर के समान पुद्गल पिंड मानता है। **(क्रमशः)**

नियमसार प्रवचन –

जीव का स्वरूप कैसा है ?

परमपूज्य सर्वश्रेष्ठ दिगम्बराचार्य कुन्दकुन्द के प्रसिद्ध परमागम नियमसार के शुद्धभावाधिकार की 48वीं गाथा पर हुये आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के अध्यात्मरस गर्भित प्रवचनों का संक्षिप्त सार यहाँ दिया जा रहा है।

गाथा मूलतः इसप्रकार है –

असरीरा अविणासा अणिंदिया णिम्मला विसुद्धप्पा।
जह लोयग्गे सिद्धा तह जीवा संसिदी णेया।।४८।।

(हरिगीत)

शुद्ध अविनाशी अतीन्द्रिय अदेह निर्मल सिद्ध ज्यों।
लोकाग्र में जैसे विराजे जीव हैं भवलीन त्यों।।४८।।

जिसप्रकार लोकाग्र में सिद्ध-भगवन्त अशरीरी, अविनाशी, अतीन्द्रिय, निर्मल और विशुद्धात्मा (विशुद्धस्वरूपी) हैं; उसीप्रकार संसार में (सर्व) जीव जानना।

(गतांक से आगे ...)

व्यवहारनय अभूतार्थ है, भूतार्थ शुद्धनय के आश्रय से बोधिबीज बोने से केवलज्ञान प्रकट होता है।

समयसार गाथा ११ में कहा है कि व्यवहारनय अभूतार्थ है और शुद्धनय भूतार्थ है। एक समय की पर्याय अर्थात् राग, द्वेष, अज्ञान, संसार को अभूतार्थ कहा; उसका अर्थ सर्वथा अभाव है – ऐसा नहीं समझना; क्योंकि सर्वथा अभाव हो तो संसार ही न हो। संसार-पर्याय गौण करके, होती हुई पर्याय को गौण करके, व्यवहार कहकर अभूतार्थ कहा है; क्योंकि वह त्रिकालीस्वभाव में नहीं है। त्रिकालज्ञानस्वभाव शक्तिरूप भण्डार है, उसको स्वीकार करना धर्म का कारण है। शुद्धनय के आश्रय से अर्थात् स्वभाव के लक्ष्य से अपने में सम्यग्ज्ञान रूपी द्वितीया उदय होती है, तत्पश्चात् केवलज्ञानरूपी पूर्णिमा हुए बिना नहीं रहती।

(३) जैसे सिद्धभगवन्त सहज केवलज्ञान से युगपत् जानते हैं, अतः अतीन्द्रिय हैं; वैसे ही शुद्धद्रव्यदृष्टि से संसारीजीव भी अतीन्द्रिय हैं।

परमतत्त्व में स्थित सहजदर्शनादिरूप कारणशुद्धस्वरूप को युगपत् जानने में समर्थ ऐसी सहज ज्ञानज्योति द्वारा जिसमें से समस्त संशय दूर कर दिये गये हैं, ऐसे स्वरूपवाले होने के कारण सिद्ध अतीन्द्रिय हैं।

ध्रुवसामान्यस्वभाव अथवा शुद्धकारणपरमात्मा को परमतत्त्व कहते हैं। उस शुद्ध कारणपरमात्मा सहजज्ञानदर्शनादिरूप कारणशुद्धरूप को सिद्धभगवन्त तथा केवलीभगवन्त केवलज्ञान से परिपूर्ण जानते हैं, उसमें किसी प्रकार का संशय नहीं रहा, ऐसे स्वरूपवाले होने से सिद्धभगवन्त अतीन्द्रिय हैं। उसीप्रकार संसारी जीवों को भी यहाँ अतीन्द्रिय कहा है। एक समय जितना इन्द्रियों और ज्ञान के साथ निमित्त-नैमित्तिक सम्बन्ध है तथा एक समय जितना ही मिथ्याज्ञान अथवा अपूर्णज्ञान है; यदि इस पर्याय को गौण कर दें तो समूचा त्रिकालीस्वभाव अनादि-अनन्त ज्ञान-दर्शन से भरपूर पड़ा है। भविष्य में प्रकट होने की बात नहीं है; किन्तु त्रिकाल को जानने में वर्तमान में समर्थ है अर्थात् शुद्धद्रव्यार्थिकनय से देखा जावे तो संसारीजीव भी अतीन्द्रिय है।

मुझे याद नहीं रहता, मेरी स्मरणशक्ति निर्बल है - ऐसी अल्पज्ञता को भूल जा, यह भेद तो व्यवहार में जाता है। अल्पज्ञता की एक समय की पर्याय को गौण करके व्यवहार कहकर अभूतार्थ कहा है तथा अनन्तज्ञान-दर्शन से भरपूर स्वभाव को भूतार्थ कहकर संसारी आत्मा को भी शुद्धनिश्चयनय से अतीन्द्रिय कहा है।

अल्पज्ञता के साथ एकत्वबुद्धि संसार का कारण है; तथा अतीन्द्रिय स्वभाव की श्रद्धा-ज्ञान और लीनता केवलज्ञान का कारण है।

अहो! आचार्य भगवन्त ने शुद्धस्वभाव के बहुत गीत गाये हैं, विशेषकर नियमसार में अवलोकन करने को मिलेंगे। वस्तु की मर्यादा दो प्रकार की है। या तो भेद अथवा अल्पज्ञता के साथ एकत्वबुद्धि करके संसार-भ्रमण करे अथवा भेद और विकार को गौण करके त्रिकाली के साथ सम्बन्ध रखे तो धर्म प्राप्त करे। इस बोल में ऐसा कहते हैं कि मेरा ज्ञान अल्प है और विशेष बढ़ाना है - ऐसी भेद के ऊपर की दृष्टि छोड़ - यह सब अभूतार्थ में जाता है; प्रत्येक जीव का ज्ञानस्वभाव

अतीन्द्रिय है - उसी के सामने देख, उसमें तीनों काल जानने की शक्ति है। इसप्रकार अतीन्द्रियस्वभाव का लक्ष्य करने पर सम्यक्स्वभाव प्रकट करके क्रम-क्रम से केवलज्ञान प्रकट होता है।

(४) सिद्धभगवन्तों के विभाव-भाव का अभाव है, इसलिए निर्मल है; उसीप्रकार शुद्धद्रव्यार्थिकनय से संसारी जीव भी स्वभाव से निर्मल है।

मलजनक क्षायोपशमिकादि विभाव-स्वभावों के अभाव के कारण निर्मल हैं।

सिद्धभगवन्तों के क्षायोपशमिकभाव, औदयिकभाव तथा औपशमिकभाव का अभाव है, उनके क्षायिकभाव प्रकट हो गया है, अतः वे निर्मल हैं; उसीप्रकार शुद्धनिश्चयदृष्टि से देखा जावे तो संसारी भी निर्मल हैं। उनका स्वभाव तो मैलरहित एकरूप है, इसलिए संसारी जीव के वर्तमान जो उदयादिभावों के ऊपर का लक्ष्य छुड़ाने के लिये उनका त्रिकाल में अभाव है - ऐसा कहते हैं। इन चारों भावों के ऊपर से लक्ष्य छुड़ाने का क्या कारण है, वह बतलाते हैं -

(१) औदयिकभाव तो विकार है; अतः वह धर्म का कारण नहीं है।

(२) क्षायोपशमिकभाव वास्तव में मलजनक नहीं; किन्तु ज्ञान का अंश है। चूँकि वह एक समयमात्र की स्थितिवाला है, उसका आश्रय करने से राग की उत्पत्ति होती है, अतः उसके ऊपर का लक्ष्य छुड़ाया है। क्षायोपशमिक सम्यक्त्व किसी भी जीव को प्रवाहरूप से ६६ सागर तक टिकता है, वह भिन्न बात है; किन्तु वह एक समय की पर्याय ही है, अतः उसके लक्ष्य से राग उत्पन्न होता है और इसीकारण से उसे मलजनक कहा गया है।

(३) उपशमसम्यक्त्व अथवा उपशमचारित्र भी वास्तव में मलजनक नहीं है, वह निर्मल पर्याय है; किन्तु उसका आश्रय लेने जावे तो राग उत्पन्न होता है, वह स्थिरता का कारण नहीं होता। उपशमभाव प्रवाहरूप से अन्तर्मुहूर्त टिकता है; किन्तु वह एक समय की पर्याय ही है और उसके आश्रय से राग उत्पन्न होता है, इसलिए उसे मलजनक कहकर आचार्यदेव उसका आश्रय लेना छुड़ाते हैं।

(४) क्षायिकभाव भी एक समय की पर्याय है और उसका लक्ष्य करने पर राग उत्पन्न होता है; अतः आगे बढ़ नहीं पाता। इसलिए पर्याय का आश्रय छुड़ाने के अभिप्राय से क्षायिकभाव को भी मलजनक कहा है।

इसप्रकार चारों भावों का लक्ष्य छुड़ाने के आशय से उन्हें मलजनक कहकर शुद्ध पारिणामिकभाव का लक्ष्य कराया गया है।

सिद्धभगवान के उदय, उपशम, क्षयोपशम - इन तीन मलजनक भावों का अभाव है; किन्तु क्षायिकभाव का अभाव नहीं - सद्भाव है। सिद्धभगवन्तों के क्षायिकभाव की परिपूर्णदशा प्रकट हो गई है, उन्हें कुछ भी प्रकट करना शेष नहीं है। संसारीजीव के क्षायिकभाव प्रकट नहीं है और जो प्रकट नहीं है उसका विचार करने से राग होता है, इसलिए संसारी के लिए क्षायिकभाव भी मलजनक है - ऐसा कहा। सिद्ध में क्षायोपशमिकादि तीन भावों का तथा संसारीजीव में दृष्टि अपेक्षा से चारों भावों को गौण करके उनका अभाव कहा है और द्रव्यदृष्टि से उसे निर्मल कहा है। इसप्रकार चारों भावों का लक्ष्य छोड़कर अपने शुद्धभाव को लक्ष्य में लेने पर पर्याय में निर्मलता प्रकट होती है।

(५) सिद्ध के समान द्रव्यदृष्टि से संसारीजीव विशुद्धात्मा है।

द्रव्यकर्म तथा भावकर्म के अभाव के कारण सिद्ध विशुद्धात्मा है; उसीप्रकार संसार में भी यह संसारीजीव किसी नय के बल से (किसी नय से) शुद्ध है।

सिद्धजीवों के समस्त विकार तथा समस्त जड़कर्मों का अभाव है, इसलिए वे विशुद्धात्मा हैं। उसीतरह संसारीजीव को एक समय जितना विकार है, उसका निमित्त जड़कर्म है, बाह्य में देव-शास्त्र-गुरु निमित्त हैं और पर्याय में क्षयोपशमभाव है; परन्तु उनमें से किसी से भी आत्मा को लाभ नहीं है; अतः उन सबको गौण करके, व्यवहार कहकर, अभूतार्थ कहा है; क्योंकि त्रिकाली शुद्धस्वभाव में उन सबका अभाव है तथा शुद्धद्रव्यार्थिकनय से संसारीजीव भी विशुद्धात्मा ही हैं - ऐसा स्वीकार करने पर पर्याय में धर्मदशा प्रकट होती है। शुद्धदृष्टि से देखा जावे तो सिद्ध और संसारी में कोई अन्तर नहीं है - ऐसा ४८वीं गाथा में कहा। **(क्रमशः)**

ज्ञान गोष्ठी

सायंकालीन तत्त्वचर्चा के समय विभिन्न मुमुक्षुओं द्वारा
पूज्य स्वामीजी से पूछे गये प्रश्न और स्वामीजी द्वारा दिये गये उत्तर

प्रश्न : बन्ध का कारण परद्रव्य और मोक्ष का कारण स्वद्रव्य है न ?

उत्तर : बन्ध का कारण परद्रव्य नहीं है; क्योंकि परद्रव्य तो सदा विद्यमान है। यदि वह बन्ध का कारण हो तो निर्बंध दशा कभी प्राप्त नहीं हो सकती। वास्तव में परद्रव्य के प्रति स्वामित्व भाव ही बन्ध का कारण है। स्वद्रव्य भी अनादि से ही है, तथापि मोक्ष आज तक नहीं हुआ; अत: स्वद्रव्य में स्वामित्व भाव होना मोक्ष का कारण है। स्वद्रव्य में स्वामित्व हो जाने पर यद्यपि परद्रव्य विद्यमान है, तथापि वह बन्ध का कारण नहीं, उससे बन्ध नहीं होता। अत: सिद्ध हुआ कि स्वद्रव्य में स्वामित्व मोक्ष का और परद्रव्य में स्वामित्व बन्ध का कारण है।

प्रश्न : मोक्ष का कारण परमपारिणामिक भाव है या क्षायिक भाव ?

उत्तर : वास्तव में तो परमपारिणामिक भाव ही मोक्ष का कारण है; किन्तु पर्याय से कथन करना हो तो क्षायिक, उपशम, क्षयोपशम को भी मोक्ष का कारण कहा जाता है।

प्रश्न : मार्ग की यथार्थ विधि का क्रम क्या है ?

उत्तर : आत्मा अचिन्त्य सामर्थ्यवाला है, उसमें अनन्त गुणस्वभाव है, उसकी रुचि हुए बिना उपयोग पर में से पलटकर स्व में नहीं आ सकता। पाप भावों की रुचि में जो जीव पड़ा है, उसकी तो यहाँ चर्चा ही नहीं है, यहाँ तो पुण्य की रुचिवाला बाह्य त्याग करे, तप-शील-संयम पालन करे, द्रव्यलिंग यथाविधि धारण करे; तथापि जहाँ तक पर की रुचि अन्तर में पड़ी है, वहाँ तक उपयोग पर की ओर से पलटकर स्व स्वभाव की ओर नहीं आ सकता। इसलिए पर की रुचि की दिशा बदलने पर ही उपयोग पर से हटकर स्व में आ सकता है। मार्ग की यथार्थ विधि का यही क्रम है।

प्रश्न : प्रथम अशुभराग टाले और शुभराग करे, पश्चात् शुद्धभाव हो - ऐसा क्रम है न ?

उत्तर : नहीं भाई ! यह क्रम ही नहीं है। प्रथम सम्यग्दर्शन प्रकट होता है, पश्चात् एकदम शुभराग टल नहीं सकता; इसलिए पहले अशुभराग टलकर शुभराग आता है - यह साधक के क्रम की बात है।

प्रश्न : मध्यस्थता का क्या अर्थ है ? क्या परद्रव्य के समक्ष देखने से मध्यस्थता हो सकती है ?

उत्तर : परद्रव्य के सामने देखते रहने से मध्यस्थता नहीं होती। स्वद्रव्य में लीनता करने पर समस्त परद्रव्यों के प्रति मध्यस्थता हो जाती है। स्वद्रव्य में लीन रहना, वह अस्ति और परद्रव्य से मध्यस्थता होना वह नास्ति है।

'मैं समस्त परद्रव्यों के प्रति मध्यस्थ होता हूँ'- ऐसा कहा है। इसमें देव-शास्त्र-गुरु की श्रद्धा, नवतत्त्व का ज्ञान, पंच महाव्रतरूप व्यवहार-रत्नत्रय का आश्रय - सभी निकाल दिया है। व्यवहार-रत्नत्रय भी परद्रव्य के अवलम्बन से है, इसलिए उसके प्रति भी मैं मध्यस्थ हूँ अर्थात् उस व्यवहार-रत्नत्रय का अवलम्बन छोड़कर अभेद आत्मा का ही आश्रय करता हूँ। शास्त्र में जहाँ व्यवहार-रत्नत्रय को निश्चय का कारण कहा हो, उसे उपचार का कथन जानना चाहिए। यहाँ व्यवहार-रत्नत्रय को हेय कहकर उसका आश्रय छुड़ाया है, क्योंकि वास्तव में व्यवहार-रत्नत्रय, निश्चय-रत्नत्रय का कारण नहीं है। निश्चय-रत्नत्रय का (शुद्धोपयोग का) कारण तो द्रव्यानुसारी परिणति ही है। व्यवहार-रत्नत्रय तो शुभोपयोगरूप है, जबकि निश्चय-रत्नत्रय शुद्धोपयोगरूप है।

प्रश्न : 'राग-द्वेष तो धर्म नहीं -अधर्म है' - ऐसा आप कहते हो; अत: जहाँ राग-द्वेष हो, वहाँ धर्म का अंश भी नहीं होना चाहिए ?

उत्तर : राग-द्वेष स्वयं धर्म नहीं है - यह बात बराबर है; किन्तु अल्प राग-द्वेष होने पर भी सम्यक् श्रद्धा-ज्ञानरूप धर्म हो सकता है। निचली दशा में सम्यग्ज्ञान के साथ अल्प राग-द्वेष भी होता है; किन्तु ज्ञानी जानता है कि वह अधर्म है, जितना राग-द्वेष रहित स्वसंवेदन हुआ उतना ही धर्म है। राग को धर्म माने, तब तो श्रद्धा-ज्ञान भी मिथ्या ही है; परन्तु राग-रहित ज्ञान स्वभाव को जानकर उसकी श्रद्धा हुई हो और राग सर्वथा टला न हो तो इससे कहीं श्रद्धा और ज्ञान मिथ्या नहीं हो जाते।

उसी प्रकार वहाँ राग-द्वेषरूप अधर्म है; इसलिए सम्यक्श्रद्धा-ज्ञान में कोई कमी हो जाती हो - ऐसा भी नहीं है। राग-द्वेष विद्यमान होने पर भी क्षायिक श्रद्धा हो सकती है; कारण यह है कि श्रद्धा-ज्ञान-चारित्र आदि अनन्त गुण हैं, वे सर्वथा अभेद नहीं है। पूर्ण की श्रद्धा होने के बाद पूर्णदशा प्रकट होने में समय लगता है, एक साथ नहीं हो जाते; परन्तु पूर्णता प्रगट होने का अपना स्वभाव है - यह बात जब प्रतीति में आ जावे तब अल्पकाल में पूर्णता प्रगट हुए बिना रहेगी नहीं।

समाचार दर्शन -

दशलक्षण महापर्व सानन्द संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ दशलक्षण महापर्व के अवसर पर श्री टोडरमल स्मारक भवन में प्रात: दशलक्षण विधान के उपरान्त पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल द्वारा तत्त्वार्थसूत्र पर प्रवचन, दोपहर में श्रीमती पूजा भारिल्ल द्वारा पंचभाव विषय पर कक्षा, सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति एवं रात्रि में पण्डित परेशजी शास्त्री द्वारा दशधर्मों पर प्रवचन हुये। तत्पश्चात् उपाध्याय कनिष्ठ, वरिष्ठ के विद्यार्थियों व वी.वि. महिला मंडल द्वारा ज्ञानवर्धक सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। सुगन्ध दशमी के दिन अ.भा. जैन युवा फैडरेशन जयपुर महानगर द्वारा दशधर्म के विषयों पर आकर्षक सजीव झांकी लगाई गई, जिसे जयपुर के लगभग 2500-3000 लोगों ने देखा और उसकी भरपूर सराहना की।

विधि-विधान के कार्य पण्डित सोनूजी शास्त्री द्वारा संपन्न हुये।

दिल्ली (विश्वास नगर) : यहाँ महापर्व के अवसर पर पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली द्वारा प्रात: ग्रन्थाधिराज समयसार के संवर अधिकार पर एवं सायंकाल क्रमबद्धपर्याय के आधार से क्रिया-परिणाम-अभिप्राय पर प्रवचनों का लाभ मिला। इसके अतिरिक्त प्रात: दशलक्षण विधान का भी आयोजन किया गया।

इस अवसर पर आपकी नवीन कृति **'नय रहस्य'** का विमोचन भी किया गया।

बीना (म.प्र.) : यहाँ महापर्व के अवसर पर पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील जयपुर द्वारा प्रात: ग्रन्थाधिराज समयसार पर, दोपहर में तत्त्वचर्चा एवं रात्रि में रत्नकरण्ड श्रावकाचार के आधार पर दशलक्षण धर्म पर प्रवचनों का लाभ मिला। इसके अतिरिक्त प्रात: सामूहिक जिनेन्द्र पूजन, सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति एवं रात्रि में प्रवचनोपरान्त पाठशाला के विद्यार्थियों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी आयोजन किया गया।

मुम्बई-जोगेश्वरी (ई) : यहाँ पर्व के अवसर पर श्री आदिनाथ दिगम्बर जैन चैत्यालय में डॉ. शुद्धात्मप्रभा टडैया द्वारा नयचक्र विषय पर प्रवचनों का लाभ मिला। सभी साधर्मियों ने दशलक्षण पर्व बहुत हर्षोल्लास पूर्वक मनाया।

फिरोजाबाद (उ.प्र.) : यहाँ पर्व के अवसर पर चन्द्रप्रभ जिनालय में पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर द्वारा रात्रि में दशलक्षण धर्म पर प्रवचनों का लाभ मिला। दोपहर में तत्त्वार्थसूत्र की व्याख्या पण्डित अजितकुमारजी जैन फिरोजाबाद द्वारा की गई।

ध्रुवधाम-बांसवाड़ा : यहाँ पर्व के अवसर पर खांदूकॉलोनी स्थित आदिनाथ चैत्यालय में पण्डित प्रवीणजी शास्त्री रायपुर द्वारा प्रात: समयसार एवं रात्रि में मोक्षमार्ग प्रकाशक पर प्रवचनों

का लाभ मिला। इनके प्रवचनों के पूर्व प्रात: श्री महिपालजी ज्ञायक एवं सायंकाल पण्डित सतीशचंदजी शास्त्री ध्रुवधाम, पण्डित आकाशजी डडूका, पण्डित संदीपजी डडूका व पण्डित चंदूभाई बांसवाड़ा के प्रवचनों का लाभ मिला। प्रात: नित्यनियम पूजन, सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति के अतिरिक्त रात्रि में ध्रुवधाम के छात्रों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी आयोजन किया गया।

खतौली (म.प्र.) : यहाँ पर्व के अवसर पर श्री पद्मप्रभ दिगम्बर जैन मन्दिर मौहल्ला कानूनगोयान में पण्डित शशांकजी शास्त्री सागर द्वारा प्रात: दशलक्षण विधान, सिद्धपरमेष्ठी विधान एवं रत्नत्रय विधान का आयोजन किया गया। दोपहर में मोक्षमार्ग प्रकाशक की कक्षा, सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति एवं रात्रि में दशलक्षण धर्म पर सारगर्भित व्याख्यानों का लाभ मिला। प्रवचनोपरान्त सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी आयोजन किया गया। सभी कार्यक्रमों में पण्डित विनीतजी शास्त्री का भरपूर सहयोग रहा।

अजमेर (राज.) : यहाँ पर्व के अवसर पर सीमंधर जिनालय एवं तीर्थधाम ऋषभायतन में पण्डित सुदीपजी जैन बीना द्वारा प्रात: मोक्षमार्ग प्रकाशक, समयसार, नियमसार व प्रवचनसार के आधार पर एवं रात्रि में दशलक्षण धर्म पर प्रवचनों का लाभ मिला। प्रात:काल पूजन विधान के कार्यक्रम व रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम पण्डित अश्विनजी नानावटी बांसवाड़ा व पण्डित ऋषभजी शास्त्री भिण्ड द्वारा संपन्न कराये गये। प्रात:काल के सभी कार्यक्रम सीमंधर जिनालय एवं रात्रि के कार्यक्रम तीर्थधाम ऋषभायतन में संपन्न हुये। **– प्रकाश पाण्ड्या**

मुम्बई (अन्धेरी) : यहाँ पर्व के अवसर पर पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री कोटा द्वारा प्रात: प्रवचनसार, दोपहर में तत्त्वार्थसूत्र एवं सायंकाल दशलक्षण धर्म पर प्रवचनों का लाभ मिला। इसके अतिरिक्त प्रात: दशलक्षण विधान एवं रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी आयोजन किया गया।

शिखरजी : यहाँ पर्व के अवसर पर श्री कुन्दकुन्द कहान नगर में पण्डित रमेशचन्दजी शास्त्री जयपुर द्वारा प्रात: मोक्षमार्गप्रकाशक, दोपहर में समयसार एवं रात्रि में दशलक्षण धर्म पर प्रवचनों का लाभ मिला। रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी आयोजन किया गया

जयपुर : दशलक्षण पर्व के अवसर पर जयपुर में विभिन्न स्थानों हुये विद्वानों के प्रवचनों का विवरण निम्नानुसार है –

श्री दिग. जैन मन्दिर बड़े दीवानजी (राजस्थान जैनसभा) में रात्रि में डॉ. भागचन्दजी शास्त्री जयपुर द्वारा दशलक्षण धर्म पर, **घी वालों का रास्ता** श्री दिगम्बर जैन बड़ा मन्दिर तेरापंथियान में प्रात: डॉ. श्रीयांसकुमारजी सिंघई जयपुर द्वारा दशलक्षण धर्म पर, **आदर्शनगर** श्री मुल्तान दिगम्बर जैन मन्दिर में प्रात: पण्डित सोनूजी शास्त्री फिरोजाबाद द्वारा धर्म का स्वरूप, धर्म से ही सुख संभव आदि सरल विषयों पर एवं रात्रि में डॉ. नीतेशजी शाह डडूका द्वारा दशलक्षण धर्म पर, **गायत्री नगर** में श्री दिगम्बर जैन मन्दिर में दोनों समय पण्डित

विनयकुमारजी पापड़ीवाल द्वारा, **सी-स्कीम** श्री दिगम्बर जैन मन्दिर सेठी चैत्यालय में रात्रि में पण्डित संजयजी शास्त्री बड़ामलहरा द्वारा दशलक्षण धर्म पर, **सी-स्कीम** में श्री महावीर पब्लिक स्कूल में प्रात: पण्डित ऋषभजी शास्त्री द्वारा एवं श्री महावीर दि. जैन उच्च माध्यमिक विद्यालय में प्रात: पण्डित अभिषेकजी कोलारस द्वारा दशलक्षण धर्म पर, **श्री दिगम्बर जैन मन्दिर सिवाड़ बाकलीवाल** में रात्रि में पण्डित दीपकजी भिण्ड द्वारा दशलक्षण धर्म पर, **जयजवान कॉलोनी** में श्री दिगम्बर जैन मन्दिर में पण्डित मनीषजी कहान द्वारा रात्रि में दशलक्षण धर्म पर, **सेक्टर-17 प्रतापनगर** में श्री दिगम्बर जैन मन्दिर में रात्रि में पण्डित अनिलजी खनियांधाना द्वारा दशलक्षण धर्म पर, **अग्रवाल फार्म** में श्री दिगम्बर जैन मन्दिर में रात्रि में डॉ. श्रीयांसजी सिंघई द्वारा दशलक्षण धर्म पर, **सत्कार शॉपिंग सेन्टर-मालवीय नगर** में श्री दिग. जैन मन्दिर में रात्रि में पण्डित राजेशजी शास्त्री शाहगढ द्वारा दशलक्षण धर्म पर, **खजांचीजी की नसियां** में श्री दिगम्बर जैन मन्दिर में रात्रि में पण्डित अभिषेकजी शास्त्री कोलारस द्वारा दशलक्षण धर्म पर प्रवचनों का लाभ मिला।

वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग द्वारा तत्त्वप्रचार

दशलक्षण पर्व के अवसर पर विदुषी स्वानुभूति जैन मुम्बई द्वारा प्रतिदिन मुम्बई से ही वाशिंगटन डी.सी. के मुमुक्षुओं हेतु वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग द्वारा प्रोजक्टर के माध्यम से लाईव इन्टरेक्टिव प्रवचन किये गये।

इस अवसर पर सर्वप्रथम युवाओं हेतु अंग्रेजी में बारह भावना विषय पर एवं तत्पश्चात् अन्य साधर्मियों हेतु हिन्दी में प्रवचन किये गये। विदुषी स्वानुभूति जैन के प्रवचनों को www.ustream.TV/channel/Jain-Pooja-group पर सुना जा सकता है।

अक्टूबर शिविर में विशेष सेमिनार

अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन विद्वत्परिषद् एवं टोडरमल स्नातक परिषद के संयुक्त तत्त्वावधान में **पण्डित टोडरमल और उनका मोक्षमार्गप्रकाशक** विषय पर **दिनांक 12 से 14 अक्टूबर तक त्रिदिवसीय संगोष्ठी** 16वें शिक्षण शिविर के अवसर पर श्री टोडरमल स्मारक भवन में आयोजित होने जा रही है।

इसमें डॉ. वीरसागरजी जैन दिल्ली, डॉ. श्रीयांसजी सिंघई जयपुर, डॉ. अशोकजी जैन दिल्ली, डॉ. राजीव प्रचंडिया अलीगढ, डॉ. राजेन्द्रजी बंसल अमलाई इत्यादि अनेक विद्वानों को आमंत्रित किया गया है।

आप सभी गोष्ठी का लाभ लेने हेतु शिविर में सादर आमंत्रित हैं।

शिविर सानन्द संपन्न

चैतन्यधाम-गांधीनगर (गुज.) : यहाँ दिनांक 24 से 28 अगस्त तक शिविर का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर प्रतिदिन प्रात:काल गुरुदेवश्री का सी.डी. प्रवचन के अतिरिक्त पण्डित संजीवकुमारजी गोधा जयपुर द्वारा क्रमबद्धपर्याय एवं दोपहर व सायंकाल तीनलोक विषय पर मार्मिक प्रवचनों का लाभ मिला। साथ ही प्रतिदिन दोनों समय पण्डित शैलेषभाई शाह तलोद द्वारा ग्रन्थाधिराज समयसार के पुण्य-पाप अधिकार पर एवं पण्डित नीलेशभाई मुम्बई द्वारा दोनों समय समयसार के मोक्ष अधिकार की प्रारंभिक गाथाओं व गति-आगति विषय पर प्रवचनों का लाभ मिला।

दोपहर में निमित्त-उपादान की कक्षा, नित्यनियम पूजन एवं सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति के कार्यक्रम पण्डित सचिनजी शास्त्री द्वारा संपन्न कराये गये। आपके द्वारा ही प्रतिदिन करवाई गई। इसके अतिरिक्त पण्डित जयेशजी शास्त्री चैतन्यधाम व पण्डित चेतनजी शास्त्री चैतन्यधाम का भी सहयोग प्राप्त हुआ।

शिविर का आयोजन शाह इंदिराबेन रमेशचन्द नाथालाल परिवार (वासणा) मुम्बई द्वारा किया गया। शिविर में मुम्बई से पधारे 100 लोगों के अतिरिक्त गुजरात, मध्यप्रदेश व राजस्थान से लगभग 1100 लोगों ने पधारकर धर्मलाभ लिया।

अष्टम गोष्ठी सानंद संपन्न

ग्वालियर (म.प्र.) : यहाँ ब्र. रवीन्द्रजी आत्मन् की प्रेरणा से मुमुक्षु मण्डल ग्रेटर ग्वालियर के तत्त्वावधान में प्रतिमाह ग्वालियर के अलग-अगल जिनमंदिरों के दर्शन-पूजन का कार्यक्रम आयोजित किया जाता है। इसी क्रम में अगस्त माह में परमागम मंदिर मुरार के दर्शनों का कार्यक्रम दिनांक 18 अगस्त को हुआ। इस अवसर पर **'क्रमबद्धपर्याय का जीवन में महत्व'** विषय पर गोष्ठी का भी आयोजन किया गया।

गोष्ठी की अध्यक्षता पण्डित प्रकाशचंदजी झांझरी उज्जैन ने की।

इस अवसर पर पण्डित अजीतजी अचल, पण्डित गजेन्द्रजी शास्त्री मौ, प्रो. विनोदकुमारजी मुरार, श्रीमती मंजु जैन, श्रीमती मनीषा जैन, पण्डित अजीतजी जैन गोरमी वाले, अचिन्त्य जैन आदि वक्ताओं ने विषय पर प्रकाश डाला।

गोष्ठी का मंगलाचरण कु. सांची जैन, कु. प्राची जैन एवं कु. तान्या जैन ने किया।

इस अवसर पर रत्नत्रय मण्डल विधान भी आयोजित किया गया।

विधि विधान के कार्य पण्डित अनुभवप्रकाशजी जैन एवं सुनीलजी शास्त्री द्वारा संपन्न हुये।

- सुनील शास्त्री, मुरार

टोडरमल महाविद्यालय का सुयश

1. टोडरमल महाविद्यालय के स्नातक पण्डित वीरेन्द्रजी शास्त्री ने दिसम्बर 2012 में आयोजित नेट परीक्षा एज्यूकेशन विषय से उत्तीर्ण की। आप वर्तमान में कुलगुरु कालिदास विश्वविद्यालय रामटेक-नागपुर से मनोविज्ञान विषय पर पीएच.डी. कर रहे हैं। साथ ही कु. परिणति पाटील एवं शैलेन्द्र शास्त्री ने भी जैन-बौद्ध एवं गांधी शांतिदर्शन विषय से नेट परीक्षा उत्तीर्ण की।

2. टोडरमल महाविद्यालय के दो विद्यार्थियों अच्युतकांत जैन जसवंतनगर (79%) एवं कु. अनुभूति जैन दिल्ली (81%) को वरिष्ठ उपाध्याय (12^{th}) में 75% से अधिक अंक प्राप्त करने पर राजस्थान सरकार द्वारा लेपटॉप देकर सम्मानित किया गया।

3. टोडरमल महाविद्यालय की छात्राओं कु. श्रुति जैन सुपुत्री पण्डित राकेशजी शास्त्री दिल्ली एवं कु. प्रतीति पाटील सुपुत्री पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील जयपुर ने राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान विश्वविद्यालय में शास्त्री तृतीय वर्ष की वरीयता सूची में क्रमश: प्रथम व तृतीय स्थान प्राप्त किया।

इस उपलब्धि हेतु कु. श्रुति जैन को संस्कृतदिवसान्तर्गत-राज्यस्तरीय-संस्कृतदिवस समारोह में दिनांक 19 अगस्त को श्री बृजकिशोरजी शर्मा (शिक्षामंत्री-राजस्थान) द्वारा स्वर्ण पदक एवं प्रशस्ति-पत्र देकर सम्मानित किया गया।

4. श्री टोडरमल दि. जैन सिद्धान्त महाविद्यालय के स्नातक डॉ. महेश जैन भोपाल को दिनांक 27 जुलाई 2013 से महर्षि पतन्जलि संस्कृत संस्थान (मध्यप्रदेश संस्कृत बोर्ड) का डायरेक्टर नियुक्त किया गया है।

महाविद्यालय के स्नातक जो म.प्र. संस्कृत शिक्षा विभाग में कार्यरत हैं, म.प्र. में संस्कृत शिक्षा विभाग से संबंधित अपनी समस्याओं के लिए डॉ. महेशजी से उनके मो. नं. 9406527501 पर संपर्क कर सकते हैं।

सभी को वीतराग-विज्ञान परिवार की ओर से हार्दिक बधाई !

पीएच.डी. की उपाधि

जैनपथप्रदर्शक के यशस्वी सह-सम्पादक **पण्डित संजीवकुमारजी गोधा जयपुर** को जैन अनुशीलन केन्द्र, राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर द्वारा **'जैनदृष्टि में तीन लोक : एक समीक्षात्मक अध्ययन'** विषय पर शोधकार्य हेतु पीएच.डी. की उपाधि प्रदान की गई। आपने अपना यह शोध कार्य डॉ. (प्रो.) बीनाजी अग्रवाल के निर्देशन में पूर्ण किया।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध सात अध्यायों में विभक्त है, जिसमें तीन लोक : सामान्य स्वरूप के अतिरिक्त अधोलोक, मध्यलोक में जम्बूद्वीप, अन्य प्रमुख द्वीप समुद्र, षट्काल विवेचन, ज्योतिषलोक एवं ऊर्ध्वलोक सम्बन्धी महत्वपूर्ण विषयों का समावेश किया गया है।

इसशोधपूर्ण कृति को शीघ्र पुस्तकाकार प्रकाशित करने की योजना है।

टोडरमल दि.जैन सि.महाविद्यालय परिवार की ओर से आपको हार्दिक बधाई।

शोक समाचार

1. कुरावली-मैनपुरी (उ.प्र.) निवासी श्रीमती दयावती जैन का दिनांक 8 जुलाई को 90 वर्ष की आयु में शांतपरिणामों पूर्वक देहावसान हो गया। आपने गुरुदेवश्री के सानिध्य में गहन स्वाध्याय किया। आप प्रतिवर्ष जयपुर आकर शिविर का लाभ लिया करती थी। आपके सुपुत्र श्री केशवचन्दजी, शैशवचन्दजी की ओर से 300/- रुपये प्राप्त हुये हैं।

2. अखिल भारतवर्षीय दि. जैन विद्वत्परिषद के सम्माननीय सदस्य डॉ. बाबूलालजी सेठी की धर्मपत्नी **डॉ. विद्यावती जैन** का दिनांक 9 अगस्त,2013 को देहावसान हो गया। आप बहुत समय से अस्वस्थ चल रही थीं। आप टोडरमल स्मारक भवन की गतिविधियों में सदैव सहयोग करती थीं।

3. मुम्बई निवासी श्री अनिलजी कामदार का दिनांक 11 अगस्त को शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आपने अपने जीवन का बहुत काल गुरुदेवश्री के समागम में बिताया। आप बहुत गहन स्वाध्यायी थे। दादर मुमुक्षु मण्डल एवं टोडरमल स्मारक की गतिविधियों में आपका सक्रिय सहयोग रहता था।

4. इन्दौर (म.प्र.) निवासी श्री राजेन्द्रजी पहाड़िया का दिनांक 17 अगस्त को शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आप अत्यंत स्वाध्यायी एवं इन्दौर मुमुक्षु मण्डल के सक्रिय कार्यकर्ता थे। जयपुर शिविर में भी आप लाभ लिया करते थे एवं टोडरमल स्मारक द्वारा संचालित गतिविधियों के अनन्य सहयोगी थे।

दिवंगत आत्मायें शीघ्र ही चतुर्गति के दु:खों से छूटकर मुक्ति की प्राप्ति करे - यही मंगल भावना है।

वेदी प्रतिष्ठा संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ जौहरी बाजार स्थित दि.जैन तेरापंथी बड़ा मंदिर में दिनांक 19 अगस्त को वेदी प्रतिष्ठा संपन्न हुई।

इस अवसर पर भगवान आदिनाथ एवं भगवान शीतलनाथ की प्रतिमाओं को जीर्णोद्धारित वेदी पर विराजमान किया गया। इस अवसर पर यागमंडल विधान के अतिरिक्त विधि विधान के समस्त कार्य डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर द्वारा कराये गये।

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो - वीडियो प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें -
वेबसाईट - www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र-श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph.: 022-26130820, 26104912, E-Mail- info@vitragvani.com